

भारत सरकार
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या: 3355
दिनांक 08 अगस्त, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र

3355. श्री बृजमोहन अग्रवाल:

क्या स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) की शाखाओं के उद्देश्य क्या हैं और देश में कार्यरत एनसीडीसी की संख्या कितनी है तथा प्रत्येक एनसीडीसी में कार्यरत कर्मचारियों और अधिकारियों का राज्य-वार व्यौरा क्या है;
- (ख) क्या सरकार ने 6 जुलाई 2023 को छत्तीसगढ़ के रायपुर स्थित क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आरएलटीआरआई) परिसर में एनसीडीसी के नए परिसर की आधारशिला रखी है और यदि हाँ, तो नए परिसर के निर्माण की वर्तमान स्थिति क्या है;
- (ग) उक्त परियोजना के लिए आवंटित बजट और परियोजना को पूरा करने के लिए निर्धारित लक्ष्य क्या हैं;
- (घ) क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, (आरएलटीआरआई) रायपुर में कार्यरत कर्मचारियों और अधिकारियों का व्यौरा क्या है तथा रिक्त पदों के ब्यौरे सहित उनकी नियुक्ति की स्थिति का पद-वार व्यौरा क्या है;
- (ङ) देश में कुष्ठ रोग के मामले की वर्तमान स्थिति क्या है; और
- (च) राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत उक्त रोग पर रोक लगाने में कितनी सफलता मिली है?

उत्तर

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क): राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) का मुख्यालय दिल्ली में है और इसकी 8 कार्यरत बाहरी शाखाएँ जयपुर (राजस्थान), बैंगलुरु (कर्नाटक), कोज़ीकोड (केरल), चेन्नई (तमिलनाडु), रायपुर (छत्तीसगढ़), पटना (बिहार), मंगलगिरी (आंध्र प्रदेश) और वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में स्थित हैं।

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) की शाखाओं का उद्देश्य जन स्वास्थ्य चुनौतियों से संबंधित राज्य-विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करना और रोगों की बेहतर निगरानी, अनुश्रवण और प्रतिक्रिया प्रदान करना है।

एनसीडीसी की प्रत्येक शाखा में कार्यरत कर्मचारियों और अधिकारियों का राज्य-वार विवरण निम्नलिखित लिंक पर दिया गया है: <https://ncdc.mohfw.gov.in/>

(ख) और (ग): प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम) के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में एनसीडीसी राज्य शाखा के निर्माण हेतु कुल 14 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की गई हैं। प्रारंभ में राज्य सरकार ने क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आरएलटीआरआई), रायपुर में भूमि आवंटित की थी। प्रशासनिक कारणों से परियोजना आगे नहीं बढ़ पाई।

(घ): सेवानिवृत्ति, पदोन्नति, त्यागपत्र, मृत्यु आदि के कारण रिक्तियां उत्पन्न होती हैं। रिक्तियों को भरना एक सतत प्रक्रिया है और संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी)/कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) के माध्यम से प्रासंगिक भर्ती नियमों के प्रावधानों के अनुसार समय-समय पर कार्रवाई की जाती है। आरएलटीआरआई, रायपुर में स्वीकृत, भरे हुए और रिक्त पदों का विवरण अनुलग्नक-I में दिया गया है।

(ड) और (च): देश में कुष्ठ रोग की स्थिति और राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत उक्त रोग पर अंकुश लगाने में प्राप्त सफलता का विवरण अनुलग्नक -II में दी गई है।

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) के संबंध में दिनांक 08.08.2025 को लोकसभा में पूछे गए अतारांकित प्रश्न संख्या 3355 के भाग (घ) के उत्तर में संदर्भित अनुलग्नक-।

आरएलटीआरआई, रायपुर में स्वीकृत, भरे हुए और रिक्त पदों का विवरण:

| पदनाम | समूह | स्वीकृत | भरे हुए | रिक्त |
|----------------------------------------------------|--------|---------|---------|-------|
| निदेशक | समूह क | 1 | 1 | 0 |
| उप निदेशक | | 1 | 0 | 1 |
| सहायक निदेशक (आर्थो) | | 1 | 1 | 0 |
| सहायक निदेशक (एपिडी.) | | 1 | 1 | 0 |
| सहायक निदेशक (सूक्ष्म जीव विज्ञान) | | 1 | 0 | 1 |
| सहायक निदेशक (पैथोलॉजी) | | 1 | 0 | 1 |
| वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी | | 2 | 2 | 0 |
| चिकित्सा अधिकारी | | 3 | 2 | 1 |
| नर्सिंग अधिकारी | | 2 | 2 | 0 |
| कनिष्ठ हिंदी अनुवादक | समूह ख | 1 | 0 | 1 |
| फार्मासिस्ट | समूह ग | 1 | 1 | 0 |
| कनिष्ठ चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकीविद् | | 1 | 1 | 0 |
| कैशियर | | 1 | 0 | 1 |
| कनिष्ठ आशुलिपिक | | 1 | 1 | 0 |
| गैर-चिकित्सा पर्यवेक्षक | | 1 | 0 | 1 |
| हेल्थ विजीटर | | 1 | 0 | 1 |
| फिजियोथेरेपी तकनीशियन | | 1 | 0 | 1 |
| पैरा मेडिकल वर्कर | | 3 | 0 | 3 |
| निम्न श्रेणी लिपिक | | 2 | 1 | 1 |
| प्रयोगशाला परिचारक | | 1 | 0 | 1 |
| चपरासी | | 1 | 0 | 1 |
| चौकीदार (कैनर के रूप में वीएच द्वारा भरा गया 1 पद) | | 5 | 2 | 3 |
| नर्सिंग अर्दली | | 4 | 4 | 0 |
| रसोइया | | 1 | 0 | 1 |
| रसोई सहायक | | 3 | 1 | 2 |
| धोबी | | 1 | 0 | 1 |
| सैनिटरी वर्कर | | 4 | 2 | 2 |
| कुल | | 46 | 22 | 24 |

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एनसीडीसी) के संबंध में दिनांक 08.08.2025 के लोक सभा अतारांकित प्रश्न संख्या 3355 के भाग (ङ) और (च) के उत्तर में संदर्भित अनुलग्नक-॥

देश में कुष्ट रोग की वर्तमान स्थिति:

- वर्ष 2024-2025 में कुल 1,00,957 नए मामले सामने आए, जिसके परिणामस्वरूप वार्षिक नए मामले की पहचान दर (एएनसीडीआर) प्रति 100,000 जनसंख्या पर 7.00 हो गई।
- 1 अप्रैल 2025 तक, 82,297 कुष्ट रोग के मामले उपचाराधीन हैं, जो प्रति 10,000 जनसंख्या पर 0.57 की व्यापकता दर (पीआर) के बराबर है।
- वर्ष 2024-25 में ग्रेड II दिव्यांगता दर प्रति दस लाख जनसंख्या पर 1.31 है।

राष्ट्रीय कुष्ट उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत उक्त रोग पर अंकुश लगाने में प्राप्त सफलता:

राष्ट्रीय कुष्ट उन्मूलन कार्यक्रम (एनएलईपी) राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के अंतर्गत केंद्र प्रायोजित योजना है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वर्ष 2027 तक कुष्ट रोग का उन्मूलन और शून्य संचरण प्राप्त करना है। भारत ने वर्ष 2005 में राष्ट्रीय स्तर पर कुष्ट रोग उन्मूलन का दर्जा प्राप्त किया था, अर्थात प्रसार दर (पीआर) प्रति 10,000 जनसंख्या पर 1 से कम थी।

विगत 10 वर्षों (2015-2025) के दौरान राष्ट्रीय कुष्ट उन्मूलन कार्यक्रम (एनएलईपी) की प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

- राष्ट्रीय स्तर पर जिला-स्तरीय उन्मूलन प्राप्ति: प्रति 10,000 जनसंख्या पर 1 से कम मामले की व्यापकता दर की रिपोर्ट करने वाले जिलों की संख्या वर्ष 2014-15 में 542 से बढ़कर वर्ष 2024-25 में 638 हो गई, जो राष्ट्रीय स्तर पर जिला स्तर पर कुष्ट रोग उन्मूलन की उपलब्धि को दर्शाता है।
- व्यापकता दर (पीआर) में लगातार गिरावट: राष्ट्रीय व्यापकता दर 0.69 (वर्ष 2014-15) से घटकर 0.62 (वर्ष 2018-19) और फिर 0.57 (वर्ष 2024-25) हो गई है, जो बेहतर शीघ्र पहचान और प्रभावी उपचार कवरेज को दर्शाती है।
- ग्रेड 2 दिव्यांगता (जी2डी) में कमी: नए मामलों में जी2डी —देरी से निदान का एक प्रमुख संकेतक— वर्ष 2014-15 में प्रति मिलियन जनसंख्या पर 4.48 से वर्ष 2024-25 में 1.31 तक उल्लेखनीय रूप से कम हो गया है, जो मामले की बेहतर खोज और शीघ्र अंतःक्षेप को दर्शाता है।
- बाल मामलों का कम अनुपात: नए पाए गए मामलों में बच्चों का प्रतिशत वर्ष 2014-15 में 9.04% से घटकर वर्ष 2024-25 में 4.68% हो गया है, जो कम सामुदायिक संचरण और समय पर पहचान का संकेत देता है।
